Part 1

प्रश्न 25. ‘ मधुप ’ जीक रचित ‘ सरिता ’ कविताक भावार्थ लिखू ।

उतर - कविचूड़ामणि काशीकान्त मिश्र ‘ मधुप ’ जीक रचनाक विषय - वस्तुक परिधि बहुत विशाल अछि । काव्य शैलीक दृष्टिएँ सतत् ई नव प्रयोग करैत रहलाह । मधुपजी एक दिस यदि उत्कृष्ट श्रृंगारिक रचना कैल तँ दोसर दिस करूण रसक आत्मभिव्यक्तिमूलक उतम प्रतीकक सेहो प्रणयन कैलनि । कतेक दिन - हीनक चित्रण पर आधारितो कथा अछि जे यथार्थवादी कहाए सकैत अछि । किन्तु मधुपजीक सर्वश्रेष्ठ वैह रचना थिक जे सहज सरल भाषामे लिखल गेल अछि तथा नवीन प्रगीत रीतिक अछि ।

सरिता शीर्षक रचनामे सरिता कँ जखन जुआनिक अवस्था होइत छैक त चेतवैत कहैत छथि -

यथा - **“ सरिते ! भ सरि ता धरि बह , जा धरि उधाम जुआनी**

मरने बनि मरनेक सदृश्य दुख भोगब रूपक रानी ।

हे सरिते जा धरि अहाँक जुआनी अछि सरि भ क बहु । जुआनी जखन खतम भ जायत त जहिना मरला पर दुःख होइत छैक तहिना अहाँक बहाव जखन मरनी - धार भ जायत त वैह दुःख भोगय पड़त । तँ सरि भ क बहु , उन्न्मत नहि होउ । जुआनी त सागरक लहरि कँ समान होइछ , छने लहरि उठैत अछि आ छने बिला जाइत अछि सागरमे । तँ जुआनीक जे क्षण भेटल अछि ताहिमे उतान भ अगराऊ नहि । जुआनीमे अगरएव अग्यानता होएत ।

अहाँक जन्म्दाता पिता अहाँक रूप देखि नहि कानथि जे केहन पुत्री भेल । जे हमरा कलंक लगा भागि पड़यलीह । अहाँ त दक्ष पुत्रीक रूपमे कुमारिये अवस्थामे भागि पड़यलहुँ । अहाँ जननि आ जनक कतेक सुखानिभूति पौवलन्हि , जखन अपन पुत्री कँ सविध शिअवकँ दान कैलनि मुदा अहाँ बिनु माय - बापक आग्याकँ भागि पद्यॅळॅःऊम । महादेवक आकर्षकणमे बिनु बियाहले भागि ऐलहुँ । अहाँ अगुता गेलौं । मुदा एखनो अहाँ पतिक ताकमे लगले छी । ई त कलियुगीक निशानी थिक ।

हे सरिते वर्षा ऋतुमे अहाँ अपन जुआनीक उधामताक जे रूप द्रखा लिअ । मुदा शरद ऋतु अबिते अहाँक चीर हरण भ जायता अहाँ कोना बचब तकर चिंता करू । जखन अहाँक दुनू कछेरक जल अधोगामी भ जायत तखन अहाँक अभिमान स्वतः टुटि जायत । तँ जुआनीमे अभिमन किनको लेल उचित नहि ।

कविचूड़ामणि नदीकेँ उपमा द जन सामान्य केँ चेतौनी देलनि अछि , जे अधिकार वा सामर्थ्य रहला पर अभिमान नहि करक चाही ।